मिथिलाक लोकसंस्कृतिमे सामाजिक समरसता

'जन' शब्दक अनेक अर्थ होइत अछि। मुदा मुख्य अर्थ अछि समाजमे रहऽवला 'सामान्य लोक'। सामान्य लोकसँ अभिप्राय अछि एहन लोक जे कोनो गाम अथवा शहरक सुसंस्कृत, परिष्कृत अथवा रुचि सम्पन्न लोकक अपेक्षा बेसी सरल एवं सहज जीवन बितबैत अछि। एहि समूहक लोक सामाजिक, आर्थिक रूपेँ उपेक्षित रहैत अछि। एहि वर्गकेँ दलित, शोषित, पीड़ित अथवा पिछड़लक संज्ञासँ अभिहित कयल जाइत अछि।

लोकसंस्कृतिक मूलमे इएह 'जन' शब्द अन्तर्निहित अछि। एहिमे जन-समूहक आत्माक संग तादात्मय स्थापित रहैछ। ओकर रहन-सहन, आहार-व्यवहार, सुख-दु:ख, सौरव-सेहंता, ओकर नीक-बेजायक क्रिया-कलाप, उत्थान-पतन आदिक नोटिस लेब अनिवार्य मानल जाइत अछि।

'संस्कृति' शब्दक अर्थ होइछ-सम्यक कृति। संस्कार आ संस्करणक भावार्थ सेहो संस्कृतिक अन्तर्गत आबि जाइछ। सभ्यता आ संस्कृति दू मूल वस्तुक अन्तरमे जँ सभ्यता मानव शरीर अछि तँ संस्कृति अन्तःकरण। संस्कृति अपनाकेँ सभ्यता द्वारा व्यक्त करैछ तऽ संस्कृतिओ साँच अछि, जाहिमे समाजक विचार ढलैत अछि एवं ओकर अनुकरणं कऽ आगू बढ़ैत अछि। अर्थात सभ्यकृति केवल मानवीकृति भऽ सकैत अछि। ओ एक सांस्कृतिक स्वरूप बनैत अछि। मनुष्यक भाव, विचार, धारणाक संगठन होइत अछि। संस्कृति अपनामे बहुत व्यापक आ गंभीर अर्थ बोध करबैछ।

लोक आ संस्कृति दुनू व्यापक संज्ञा थिक। एकरा विखंडित कऽ कऽ नहि देखल जा सकैत अछि। लोक समूचा जीव, प्रकृति, जीवन, स्वर्ग-नरक, कल्पना यथार्थक नाम अछि। लोक सृष्टिक अन्दर आ बाहर पसरल अछि। लोक सभठाम अछि। मिथिलामे तऽ लोक शब्द सगा-सम्बन्धी अपन-परोड़सँ लऽ कऽ घरनी धरिक लेल प्रयुक्त होमऽ लागल अछि। कहबाक अभिप्राय अछि जे लोकसंस्कृति ओ संस्कृति थिक जकर स्वाद सुच्चा प्रयुक्त होमऽ लागल अछि।

कहबाक अभिप्राय अछि जे लोकसंस्कृति ओ संस्कृति थिक जकर स्वाद सुच्चा ग्रामीण गमइक प्राकृतिक कोरामे हमरा भेटैत अछि। जकर आनन्द शुद्धताक संग प्राप्त होइत अछि। हम अपन प्राकृतिक आत्मानुभव करैत छी। सङहि

इहो विचारणीय जे मिथिला भारतक एक अतिप्राचीन, सुसभ्य एवं सुसंस्कृत क्षेत्र रहल अछि। एकर भौगोलिक स्थिति जतऽ एकरा अतिमहत्वपूर्ण बनबैत छैक, ओतऽ हम देखैत छी जे समुन्नत सांस्कृतिक परिवेश एकरा उत्तराधिकारमे भेटल छैक। एक दिससँ मिथिलाक प्राकृतिक सौन्दर्य एवं वैदिक परम्परा जतऽ मिथिलाक प्रबुद्ध वर्गकँ आध्यात्मिक एवं परिमार्जित चिन्तन दिस प्रेरित कयलक तऽ ओतऽ ओ जन साधारण (लोक)कँ सहो लोक-कल्याण हेतु अपन डेग बढ़ेबाक लेल बाध्य कयलक। एक दिस जखन मिथिलाक प्रबुद्ध वर्ग न्याय, दर्शन, व्याकरण आ परिमार्जित साहित्यिक रचनामे लागल छलाह जऽ ओहि कालखंडमे सामान्य जन-जीवन सेहो मिथिलाक जन-सामान्यक प्रति प्रबुद्ध वर्गक नकारात्मक दृष्टिकोणसँ आहत भऽ अपना लेल किछु रचबाक, करबाक ओ आगू बढ़बाक लेल बाध्य भेलाह। अर्थ स्पष्ट अछि जे प्रबुद्ध वर्गक न्याय, दर्शन, व्याकरण ओ सर्जनमे जटिलता अलंकारयुक्त कलात्मक आ पांडित्यपूर्ण हेबाक कारणेँ जनसामान्य पहुँचसँ दूर भऽ जाइत गेल तऽ ओतहि समाजक निम्न स्तर (लोक) परक सर्जनमे आडबंरहीनता, सम्प्रेषणीयता, रसात्मक ओ हृदयगाही बनेबाक तत्व विद्यमान रहल। इएह आग्रह कारण भेल जे अशिक्षित, अल्पशिक्षित वर्गक संवेदनशील इकाई द्वारा कृत्य कयल गेल जकरा मिथिलाक सम्पूर्ण वर्ग स्वीकार कयलक, प्रशंसा कयलक एवं आत्मसात कयलक, किएक तऽ एहि कृत्यमे मनुष्यक दैहिक, दैविक एवं भौतिक क्रिया-कलापक संगे सम्पर्क स्थापित करबाक सार्थक प्रयास कयल गेल। इएह मिथिलाक मूल संस्कृति लोक-संस्कृतिसँ अभिहित कयल गेल। एहिमे जतऽ जादू-टोना, तंत्र-मंत्रक स्थान भेटल अछि ओतहि मनुष्य मात्रक दैहिक क्रिया-कलापेँ ध्यनमे राखि ओकर विभिन्न आवश्यकता, इच्छा हर्ष-विषाद, प्रेम-विरह, घृणा, पारिवारिक सम्बन्ध, विश्वास, भक्ति भावना, शौर्य-पराक्रम, सामाजिक सम्बन्ध आदि सभ विषयकँ स्थान एहि संस्कृत मध्य सुरक्षित पाओल जाइछ।

कनेको सन्देह नहि जे मिथिलाक लोकसंस्कृति मिथिलाक गाम-गमइक ओ संस्कृति अद्यपर्यन्त सुरक्षित अछि। एहिमे समाजक जनजीवन सभ अर्थ समाहित अछि। एहि संस्कृति मध्य कोनो खाधि नहि अछि। कोनो आड़ि नहि अछि। कोनो वर्ग नहि अछि। कोनो जाति-धर्म नहि अछि। जन-जीवन तऽ ओहि संस्कृतिमे बसैत अछि, ओंघराइत अछि, पलैत आ बढ़ैत अछि। मिथिलाक लोकसंस्कृतिमे जतेक कोनो तत्व समाहित अछि सभ ठाम अपन माधुर्य लऽ कऽ उपस्थित अछि। सभ ठाम सामाजिक समरसताक भाव अन्तर्निहित अछि। ओएह भाव प्रस्फुटित भऽ मिथिलाक लोकसंस्कृति आइयो धरि जीवन्त अछि। ओएह भाव प्रस्फुटित भऽ मिथिलाक लोकसंस्कृति आइयो धरि जीवन्त अछि, कतेको अन्हर-बिहाड़िसँ लड़ैत आ झगड़ैत।

संक्षिप्ततः मिथिलाक लोकसंस्कृति मध्य अबैत-एहिठामक लोकगाथा, लोकगीत, लोककला, लोकशिल्प, लोकसंगीत, पाबनि-तिहार, लोकनाट्य, लोकनाच, लोकमंत्र, भाओ-भगैत-गहबरगीत, रहन-सहन, खाइन-पीअन, पेन्हब-ओरहब आदि। एहिमे जे सामाजिक समरसता देखल जाइत अछि, कतौ अन्यत्र नहि। सामाजिक समरसतामे मिथिलाक तन-जीवनक जे योगदान रहल अछि, से प्रशंसनीय अछि। किछु पर विचार अभीष्ट अछि-

सर्वप्रथम लोककथापर विचार करैत छी तऽ दखैत छी जे ई हाजिर जवाबी, लोक चातुर्य एवं ऐतिहासिक जनश्रुतिपर आधारित लोककथा सम्पूर्ण मिथिलामे भरल-पुरल अछि। एहिमे मिथिलाक इतिहास आ सामाजिक समरसताक लेखा-जोखा सुरक्षित अछि। जखन हम नानी, दादीक मुँहसँ 'मेनाक बच्चा सिलौरिया रे दूटा जामून गिरा'

सुनैत छी तऽ एहिमे समाजमे सुरक्षित हमरा नैतिक मूल्यक ज्ञान होइत अछि। जनजीवन आनन्दित एवं गौरवान्वित होइत अछि। नेना किनको हो कोनो विभेद नहि। एहि कथामे कतौ ने लिखल अछि जे बच्चा कोनो हिन्दूक छैक, आ कि मुसलमानक। ब्रह्मणक छैक कि शेखकेर। डोमक छैक कि दुसाधकेर। ई लोकवाणी मिथिलाक लोकसंस्कृति मध्य सामाजिक समरसताक एक्स-रेक काज करैत अछि।

मिथिलाक प्रसिद्ध लोककथामे धार्मिक एवं व्रतादि विषयक कथाकेँ छोड़ि लोरिक कथा, राजा सलहेसक कथा, नैका बनिजाराक कथा, कोशी, कमला, बलान नदीसँ सम्बन्धित कथा, सतभैंयाक कथा, बरहकेसी रानीक कथा आदि जतऽ मिथिलाक प्राचीन सामाजिक व्यवस्थाकेँ उकेरैत अछि ओतऽ मिथिलाक प्रसिद्ध व्यक्तित्व गोनू झासँ सम्बन्धित लोककथा मिथिलाक जनमानसकेँ व्यंग्य-विनोदक एकटा नव आयाम दैत अछि। एहिमे एक दिस जतऽ हसन-हुसनैक कथा-गाथा, आल्हा-रुदलक कथा-गाथा, बालापीरक कथा-गाथा, मीरा-साहेबक कथा-गाथासँ हम ओत-प्रोत रहैत छी तऽ दोसर दिस ओतऽ दाहा, पमरियासँ सम्बन्धित कृत्य हमर जनजीवनक सामाजिक समरसताक अद्वितीय उदाहरण दृष्टिगत होइत अछि। एहिठामक जनजीवन फगुआ सन हिन्दुक पाबनिमे मुसलमान लोकनि अपन भागीदारी प्रस्तुत करैत अछि तऽ दोसर दिस मुहर्रम, शवेबारात, इदुलफितर आदि पाबनिमे हिन्दू बालक, ललना जंगी, सिरनी, बद्धी चढ़ा अपन भागीदारी प्रस्तुत करैत सामाजिक समरसताक अमिट छाप छोड़ैत अछि। गहबर, थान, पिपरक गाछक नीचाँ सरकल गाछी, हाट-गाछी, चौक-चौराहा आदिपर मीरासाहेबक गाथा, आल्हा-रुदलक गाथाक संग धर्मराज, सलहेस, लोरिक, दीनाभद्री गाथाक पाबन करैत अछि तऽ कतोक हिन्दू 'रोजा' रखबाक ब्रत।

मिथिलामे सूर्योदय लोकगीतसँ होइत अछि तऽ सूर्यास्त सेहो। राति लोकगीतकेँ अपना छातीसँ लगौने ससरैत अछि। साँझ-भिनसर सेहो लोकगीतेक मध्य अवतरित होइत अछि। वस्तुतः लोकगीत स्वतः स्फूर्ति होइत अछि। ओहिमे मानव उल्लास मुखरित होइत अछि आ मोनक वेदना सेहो फूटि पड़ैत अछि। जन्मसद्द लऽ कऽ मृत्यु पर्यन्त मिथिलाक जन-जीवन समय आ स्थानपुरुष अपन-अपन गीत गाबि परमानन्दक प्राप्ति करैत रहैत अछि। मिथिलामे गावऽवला गीत सोझे ह्रदयपर चोट करैत अछि। एहिठाम 'झरनी' गीत गाबि हिन्दू लोक खूब आनन्दित होइत अछि तऽ फगुआक गीतमे मुसलमान सराबोर भऽ डंका बजा कऽ रंग-अबीर लगा-लगाकऽ, रहैत अछि।

बंगलापर दादा रोबै
अंगनामे दादी
टीका पहिरा कऽ
सेहरा पहिर कऽ
कुर्सी बैसल दुल्हा।''

ई गीत मिथिलाक मुसलमानक घरक प्रचलित विवाह गीत थिक तऽ

''हाय ! अल्लाह ! हाय ! हाय !
सैयद जैथीन लड़ऽल हाय !
के जेतै हाजीपुर के जेतै पटना
सैयद जैथीन रैनी बन लड़लऽ हाय।

मसरिया बहुतांश मुसलमानक लेल ' धर्ममंत्र' जकाँ पावन मंत्र अछि, जाहिमे मिथिलाक जन-जीवन जीबैत अछि। एहन सामाजिक समरसताक ओज मिथिलाक लोकगीतमे सर्वत्र समान रूपमे देखल जाइत अछि। 'जट-जटिन' सन गीत सभलललनाकेँ 'गरा-जोड़ि' कऽ देखल जाइत अछि।

मिथिलाक लोकनाट्य भारतीय लोक नाट्य जगतमे अपन विशिष्टताक धाख जमौने अछि, जकर अपन इतिहास छैक। हिमालय आ गंगाक मध्य अवस्थित मिथिला सांस्कृतिक दृष्टिसँ बड़ उर्वर अछि। हिमालय एकर प्रेरणाक स्रोत छैक तऽ नदी एकर सांस्कृतिक उद्भावक। दोसर दिस वन-पर्वतसँ भरल, शस्य-श्यामला भूमि एकर रंगमंच। मेघक गर्जब, बिजलौकाक चमकब, बसातक प्रलयंकारी स्वरूप, कोइलीक कुहुकब, मोरक नाचब, पतझड़, वसंत, हेमंत आदि ऋतु प्राकृतिक अनंत असीम योग लोक नाट्य उद्गम एवं विकासक मूलाधार थिक। ग्राम्य जीवनक प्रमुखताक कारणेँ लोक-नाट्यमे लोकजीवनक जतेक सुन्दर समागम कयल जाइत अछि, से अन्यत्र दुर्लभ अछि। जनजीवनसँ बान्हल रहलाक कारणेँ एहि विशाल भू-भागक जन समूह लोक, नाट्यक माध्यमसँ अपन आंचलिक परम्पराकेँ अक्षुण्ण रखने अछि। 'सामा-चकेबा' मिथिलाक लोकप्रिय महिला नाट्य थिक। एहिठाम सभ जाति आ वर्गक लोक सामा खेलाइत अछि। एहि नाटकमे भाइ-बहिनक प्रेम अछि तऽ दोसर दिस चुगलपनक फल देखाओल जाइत अछि। एहिठाम एखनो सलहेसक गहबर गाम-गाममे देखबामे अबैत अछि। एहिठाम लोकसभ द्वारा नाच, नाटक आ भाओ एखनो धरि होइत अछि। एहि आयोजनमे सभ जाति आ वर्गक लोक भाग लैत अछि। एतऽ लोरिक, आल्हा-रुदल नाटकमे सभ तरहक लोकक भागीदारी सामाजिक समरूपताकेँ दर्शबैत अछि। हमरा ओहिठाम 'नसीर' आ 'बसीर' के सलहेस नाचमे अपन प्रदर्शन जन-जीवनमे स्पष्ट छाप छोड़ने अछि।

मिथिलामे छप्पन कोटि देव-दानव, भूत-पिशाच, वीर-पीर, सेवक-भगत, ओझा-धामी आदि प्रकल्पित छथि जकरा लेल सालो भरि पाबनि-तिहारक क्रम लागल रहै छैक। लोक जीवनसँ घनिष्ट रूपेँ सम्बन्ध होयबाक कारणेँ ई अपनामे ततेक घुलि-मिली गेल छैक, जे ओकरा फराक करब अत्यंत दुष्कर भऽ गेल अछि। मिथिलाक गाममे बसनिहार बाल-वृद्ध-वनिता, पुरुष-नारी, किसान-मजदूर, गरीब-धनीक, द्विज-अद्विज, सभक लेल ई पाबनि-तिहार हर्ष आ उल्लास सभ अजय स्रोत थिक। एहिमे नोत-हकार, बेउन बट्टा, पैंच-पालट, लेन-देन, सामाजिक सौहार्द्रताके सदिखन बनौने रहैत अछि। चाहे ओ दिआबाती, फगुआ, जुड़शीतल, छठि, भरदुतिया, राखी, वसंत पंचमी आदि हो अथवा शबे बरात, रमजान, इदूलफितर आर मुहर्रम। एहि पाबनि सभमे जातिक जन-जीवनक हिस्सेदारी होइत अछि। पाबनि-तिहारमे प्रयुक्त होमऽ वला सूप, कोँनिया जँ डोम जातिक लोक कलाकार हाथसँ बनल रहैत अछि तऽ दीआ, कुम्हार जातिक कलाकार हाथसँ। तेल, तेलीक हाथसँ देल गेल रहैत अछि तऽ ढोल-तासा आदि बजेबाक काज चमार जातिक लोक सभहक हाथ करैत अछि। स्पष्ट अछि जे-मिथिलांचलक जनजीवन अतिवादी नहि अपितु समन्वयवादी होइत अछि।

एहिना मिथिलाक लोककला यथा-मूंज, पथियाक सीकीक पौती, खजूरक शीतलपट्टी, धानक झट्टाक गोनरि, टकुरी ओ चरखाक प्रचलनि जोलहाक वस्त्रशिल्प, कसीदाओ बुनाइक परिपाटी, माटिक महादेवसँ लऽ कऽ माटिक

कोठी, घोड़ा बनाएब, माटिक मूर्ति ओ बासन, कनियाँ-पुतरा बनेबाक परिवाटीमे एहिठामक जनजीवनक भागीदारी प्रबल रूपेँ अछि जाहि मध्य सामाजिक समरसता परिलक्षित रहैत अछि। एहिठामक लोक संगीतमे सेहो सभ जातिक लोकक भागीदारी रहैत अछि। बँसुली, कलारनेट, ढोलक, नगाड़ा, मृदंग, डाफ, डमरू, खजूरी, सारंगी, एकतारा, सितार, वीणा, रसन-चौकी, सिंगी आदि द्वारा बजाओल जा रहल लोकसंगीत मध्य भाँट, मौलाप्यारे, बक्खो-बखिनीक संग पचनियाँ, गुदरिया आदिक संग सभ जाति-धर्मक लोक जन-जीवनमे एहिसँ सम्बद्ध अछि। गोदना, मधुबनी पेंटिंग आदिमे सेहो सामाजिक समरसता प्रचुर मात्रामे देखल जाइत अछि।

एकर अतिरिक्त मिथिलाक कतिपय लोकसंस्कृति मध्य सेहो सामाजिक समरसता देखल जाइत अछि। मुदा देश समाज आ संस्कृति आई संक्रमणकालसँ गुजरि रहल अछि। सम्पूर्ण जन-जीवन अस्त-व्यस्तताक दंश झेल रहल अछि। अत्याचार, अतिचार, बलात्कार, मार-काट चारू कात अपन पाँखि पसारि रहल अछि। एहिठामक लोक दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, मलेशिया, अरब, इराक, आदि जाकऽ अपन रहन-सहन खान-पीन, पहिरब-ओढ़व आदि बिसरि रहल अछि। विचार संक्रमणित भऽ गेल अछि। टी.भी. सिनेमा आदिक प्रभावे पाश्चात्य सभ्यता आ संस्कृतिक आक्रमण तीव्र गतिमे बढ़ि गेल अछि। वर्तमान समाजेँ एतेक विडम्बना सहलाक बादो जतऽ एकदिस यूनान, मिस्त्र, रोम आ चीनक प्राचीन संस्कृति लुप्त प्रायः भऽ गेल अछि, ओत भारतीय संस्कृति सतामे कने-मने विकृति अएलाक उपरान्तो जौं जहिनाक तहिना सुरक्षित बनौने अछि तऽ एक मूल कारण अछि एहि ओजके सुरक्षित रखबाक लेल धैर्य, शक्ति, उत्साह आ संवेदनशील मनोभावक।

शब्दार्थ

तादात्म्य = एकात्मकता, अभेद

सुच्चा = शुद्ध

गमइक = गामसँ सम्बन्धित

हृदयग्राही = बोधगम्य

अल्पशिक्षित = कम शिक्षित

अद्यपर्यन्त = आइधरि

माधुर्य = मिठास

हाजिर जबाबी = तुरत जवाब देनिहार

ललना = किशोरी

वेदना = कष्ट

उर्वर = उपजाऊ

अन्यत्र = दोसर ठाम

दंश = क्लेश

कोटि = करोड़

प्रश्न ओ अभ्यास

लघूत्तरीय

1. 'जन' श्ब्दक की अर्थ होइत अछि?
2. 'संस्कृति' शब्दक अर्थ स्पष्ट करू?
3. 'लोकसंस्कृति' शब्दक वर्णन करू?

दीर्घोत्तरीय

1. मिथिलाक लोक संस्कृतिमे सामाजिक समरसता पूर्णत: व्याप्त अछि, वर्णन करू।
2. सामाजिक समरसतामे मिथिलाक जन-जीवनक महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि। प्रस्तुत लेखक द्वारा एकरा प्रमाणित करू।
3. मिथिलाक लोक-नाट्यमे लोक-जीवनक सुन्दर समागम भेल अछि। उदाहरण द्वारा स्पष्ट करू।
4. मिथिलाक प्रमुख पावनि-तिहारक नाम लिखू।

भाषा अध्ययन

1. एहि पाठमे उल्लिखित व्यक्तिवाचक संज्ञाकेँ बीछि कऽ लिखू।
2. मैथिलीमे बहुतो सहचर शब्द होइत अछि जे सर्वदा संग-संग युग्म रूपमे प्रयुक्त होइत अछि। जेना एहि निबन्धमे प्रयुक्त अछि-सगा-सम्बन्धी, जन-जीवन, एहिना दस गोट सहचर शब्द ताकि वाक्यमे प्रयोग करू।
3. निम्नांकित शब्दकेँ अपन वाक्यमे प्रयुक्त करू :-

   ग्रामीण , लोककथा, लोकगीत, पाबनि, ललना।

योग्यता विस्तार

1. अपन दादी, नानी वा कोनो बुजुर्ग महिलासँ 'सामा-चकेवा' कथाकेँ सूनि अपन अभ्यास पुस्तिकामे लिखू।
2. अहाँ अपना घरमे दीया-बाती कोना मनबै छी? सविस्तारसँ लिखू।
3. फगुआ पर निबन्ध लिखू।

विभा रानी

जन्म - 1959 ई.

जन्म स्थान - मधुबनी शहरमे

वृत्ति सम्प्रति - हिन्दी अधिकारी इन्डियन ऑयल कॉरपोरेशन लि0, चेन्नई

कृति - मैथिली, हिन्दीमे अनवरत कथा लेखन, अन्यान्य भाषासँ मैथिली, हिन्दीमे अनुवादकलामे दक्ष।

प्रस्तुत कथा 'अज्ञातवाससँ घुरइत' चन्द्र गरियालीक कश्मीरी कथाक अनुवाद थिक।

अज्ञातवाससँ घुरइत

किशनलाल घर, कश्मीरी पंडित सोपियान के निकट एक गोट छोट, सुंदर आ मुस्लिम बहुल गाममे रहै छलाह। जहिया स' हुनका मोन छलनि, हुनकर परिवार अन्य चारि अन्य भट्ट ब्राह्मण परिवार संगे ओहि गाममे रहैत छलाह। गाम सेब आ चेरीक बगान स' भरल रहैत छल। नेनपनमे ओ अपना गामक शिव मंदिर लगक नदीमे छपाक-छपाक करैत छलाह। शिव-पार्वती आ गणेशक विशाल मंदिर पड़ोसक सोपियानमे छल, जत' ओ पढ़' लेल जाइत छलाह। ओ एक गोट पुरान फैशनवाला व्यक्ति छलाह आ सदिखन पारंपरिक कश्मीरी पोशाक, माने एक गोट ढल्लमढल फिरन आ उज्जर पगड़ीमे रहैत छलाह। ललाट पर सदिखन चंदन तिलक सुशोभित रहै छलै। ओ भिन्सरमे पूजा आ संध्यामे आरती करैत छलाह। लघुशंका लेल जाइत काल ओ सदिखन अपन जनेउ कान पर खोंसि लइत छलाह, जे जनेउ अपवित्र नञि भ' जाइ। हुनक दिनचर्या ब्राह्ममुहूर्त स' आरंभ भ' जाइत छलै-सूर्य नमस्कार, तकरा बाद नदीमे डुबकी लगेनाइ, फेर गाम छोट-छीन मंदिरमे पूजा आ फेर शिवलिंग पर दूध ढारनाइ धरि। हुनकर एक गोट छोट छीन जमीन छलै जत' ओ धान उगबैत छलाह। एकरा अतिरिक्त हुनकर घरक पाछाँमे एक गोट बगीचा सेहो छलै, जाहिमे भाँति-भाँतिक फल लगैत छल। हुनकर पत्नी ओहि फलक गाछ आ तरकारीक बगानक देख-रेख करैत छलीह, जत' ओ साग-पात, भाँटा आ अन्य तरकारी सभ उपजाबै छलीह। हुनकर चूल्हि लेल जारनिक कमी नञि छलै, हुनकर दू गोट गाय-जानकी आ राधा हुनकर घरक कल्पना के संपूर्णता प्रदार करै छलै।

हिंदु परिवारक हत्या आ हिंदु घर सभ केँ पाक प्रशिक्षित इस्लामी आतंकवादी द्वारा जरेबाक अफवाह उफान पर छलै। डर कश्मीरमे रह'वला पंडित सभक कोंढ़मे बैसि गेल छलै। ओ सभ एक के बाद एक क' क' केँ घाटी छोड़ि रिफ्यूजी कैम्पमे रह' लगलाह । ई कैम्प सभ जम्मू सहित देशक अन्य भागमे छलै। किशनलालक गाम सेहो एकर अपवाद नञि भेलै। एक के बाद एक बाकी तीनू ब्राह्मण परिवार अपन माल-असबाब संगे अपन पड़ोसी स' विदा ल' लेललनि आ

अपन ज ःस्थली, अपन गाम कें एक गोट अज्ञात भविष्य पर छोड़ि देलनि। निस्संतान आ प्रौढ़ किशनलाल आ लीलावती बूझि नञि पाबि रहल छलाह जे की करी? हुनका दुनू कें जम्मू अथवा दिल्लीक मादे किछु नहि बूझल छले। ओ दुनू सोपियान स' आगाँ कहियो नहि गेल छलाह। हुनकर जनितब, हुनकर किओ सहोदर हिंदुस्तानक कोनो कोन्टामे नहि रहै छलै। ओ सभ शिक्षित नञि छलाह आ नञि जानै छलाह जे पैघ शहर सभक जीवन कला की होइत छै? हुनका लग नञि त' यात्राक साधने छल, नञि यात्रा लेल निर्धारित कोनो स्थान, जत' ओ जा सकितथि। जीवन भरि ओ दुनू अपन उएह जमीनक छोट-छीनक टुकड़ा पर अपन जिनगी खेपि आएल छलाह अपन गाम स' बाहर कोना रहबाक छै, हुनका नञि बूझल छल। हनुका अंततोगत्वा इएह लागलै जे इज्जति-पानि स' रहबा ले सर्वोत्तम उपाय छै हुनकर अपनहि घर आ अपन जमीन। बिना आसमानके कें जम्मूक कोनो रिफ्यूजी कैम्पमे रहि क' जिनगीक साँस कें घिचनाइ कें कानो अर्थ नहि छै, जत' धूल, गमी आ अवहेलना भरल छल। हुनकर मुसलमान दोस्त सभ, हुनका स' प्रेम करैत छलाह आ चाहै छलाह जे ओ दुनू ओहीठाम बनल रहथु। ओ सभ साहस देलनि जे अहाँ सभ अहीठाँ रहू, मुदा अपना कें देखार नञि करू। ओ सभ कहलनि 'पंडित जी! जत' धरि अहाँक उपस्थिति बड़ सघनगर नञि रहत, अहाँ शान्ति स' अहिठाँ रहि सकै छी। मुदा अपना घर-सीमान स' बाहर नञि निकलब, कियैक त' गामक बाहर खतरा मंडरा रहल अछि।

अइ तरहें किशनलाल आ लीलावती अपना कें आतंकवादी सभ स' नुका क' राखि लेलनि। आतंकवादक भयानक वर्ष दर वर्ष गुजरैत मृत्युक भय सदिखन हुनकर माथ पर नचैत रहैत छलै। एक गोट अनिश्चितता स' दुनू ग्रस्त रहइत छलाह जे कतहु कोनो राति मे कोनो आतंकवादी हुनकर दरवाज नञि भड़भड़ाबए लागए।

अहिना क' सात भयानक वरष बीति गेलै। कहियो-कहियो क' कोनो पड़ोसी हुनकर दुरा पर अनाजक बारी खसा जाए, जाहि स' ओ दुनू प्राणी अनका द्वारा बिना नोटिस केने अपन दिन गुजारि सकथु।

सात वर्ष कोनो कम नञि होइ छै आ तखन त' एकदमे नञि, जहन अहाँ आतंक, भय आ असुरक्षा स' घेरल रहि रहल होइ। मुदा सात बरखक एकांतवास पंडित जी कें मोन कें हौड़' लागलै। हठात एक दिन ओ अपना पत्नी स' कहलनि-'हम बाहर जा रहल छी। एना नुका-नुका क' जीबा स' हम आजिज आबि गेलहुँ। घर नञि छोड़ू, गाम नञि छोड़ू, दुकान-दौरी नञि जाउ, लोक आओर स' भेंट-घाँट नञि करू? हमर दम सकदम भेल जा रहलए। हम बाहर निकलि क' शहरक हवा खाए चाहै छी। हम देख' चाहै छी जे लोक सभ केहेन देखाइ दै छै। हम चाहै छी बजारक हल्ला-गुल्ला सुन' आ अनुभव कर'। हम लेब' चाहै छी कान्दुखन (बेकरी) मे बनि रहल ताजा पाँवरोटीक गंध।'

लीलावतीक लाख-लाख अनुग्रह, अनुनय-विनयक बावजूद पंडित जी नञि रुकलाह। ओ अपन ताजा धोएल आ कलफ चढ़ाओल चुस्त पयजामा पहिरलनि, अपन सभ स' नीक फिरन चढ़ौलनि, उज्जर पगड़ी बान्हलनि। नव जनेऊ धारण केलनि। ललाट पर चन्दनक खूब पैघ तिलक लगेलनि, अपन सभ स' पुरान पशमीना शॉल अपना क्रान्हा पर

राखलनि आ अखरोटक लकड़ी स'- बनल चाँदीक मूठवाला छड़ी संगे शहरक रौनक देख' लेल तैयार भ' गेलाह। ओ बस स्टॉप धरि गेलाह-सात दीर्घ वर्षक बाद घर स' पहिल बेर पएर बाहर राखैत। बस स्टैंडक काया-पलट भ' गेल छलै। ओ नव लागि रहल छलै। बस जल्दीए आबि गेलै। ओ ओहिमे चढ़ि गेलाह। बस फुल छलै। जहिना ओ बसमे घुसलाह कि बसमे बैसल सभटा यात्री हुनका बड़ आश्चर्य स' देखलकै। हुनकर सभक मुह आश्चचर्य सँ विस्फारित भ' रहल छलै, कियैक त' एतेक वर्षमे ओ सभ कोनो पंडित के नञि देखने छलाह। एक गोट जवान उठि क' अपना सीट हुनका देइत बाजलै,-'नमस्ते पंडितजी। अहाँ बैसू! दोसर यात्री बाजलनि-'बराए-मेहरबानी, बैसि जाउ आ हमरा आओर कें शर्मिंदा नञि करू।' एक गोट आओर पसिंजर बजलै-'सर! हम सभ कोनो पंडित कें देख' लेल तरसि गेल छी।'

बस शहर गेलै। पंडित जी बसक खिड़की स' शहर मे भेल अनेकानेक परिवर्तन कें देखबैत रहलाह। ओत' बहुत रास नव दोकान आ नव कार सब छलै, जिनका एकरा स' पहिने कहियो ओ रोड पर नञि देखने छलाह। अचानक हुनकर ध्यान बड़का मंदिर पर पड़लनि। ओहो अलग जकाँ लागि रहल छलै। ओकर बाहरी देबाल पर झाड़-झंखाड़ लागल छलै आ गेट पर खूब बड़का ताला लटकि रहल छलै। मंदिर उपेक्षित छल आ एतेक साल स' तालामे बन्द छल, मुदा छल। ओ भावुक भ' उठलाह। हुनका मोन पड़लनि घाटीक शैवेत पंडित सभक ओहि ठाँ शिवरात्रिक सभ स' पैघ उत्सव होइत छलै, जत' सभ किओ जुटैत छलै, प्रत्येक शिवरात्रि कें ओ अपन माय संगे अबैत छलाह। बाद मे पत्नी संगे आब' लगलाह। आब लगभग सात बरस भ' गेलै मंदिरक दर्शन केने। मंदिरक पुजारी अपन नव परिवार के ल' क' जम्मू चलि गेल छलाह आ मंदिरमे तहिया स' ताला बंद छलै। ओत' बीएसएफ के दु टा जवान बंदूक ल' क' मंदिरक रखवली क' रहल छलै। ईश्वर स्वयं अपना कें बचा क' राख'मे असमर्थ छथि। जेना-जेना गप्प सभ मोन पड़ैत गेलै, हुनकर आँखिसँ' नोर झहरैत गेलै।

बस बाजारमे रुकलै। पंडित जी उतरलाह आ सोझा हबीबक माछक दोकान दिस देखलनि। अपन स्वत: थोपल निश्कासनक कारणे ओ पिछला सात बरस स' माछक स्वाद नञि पओने छलाह। हबीब हुनका एतेक दिन बाद देखि प्रसन्नता स' भरि उठलै। ओ सभ स' पैघ आ सभ स' नीक माछ एक गोट अखबारमे पैक केलकै और पंडित जी के हाथमे द' देलकै-'पंडीत जी, ई हमरा दिस स' अहाँ दुनू लेल एक गोट छोट-छीन तोहफा बुझू।' पंडित जी ओकरा पाइ देइते रहथिन, जकरा ओ किन्नहु नञि स्वीकारलैक। पंडित जी एकरा बाद सुला, माने सुलेमानक फल आ तरकारीक दोकानमे प्रवेश केलनि। सुलेमान सेहो हुनकर ओतबे प्रसन्नता स' स्वागत केलकै। ओ चेरी आ सेब सभ बक्सामे पैक क' क' बस मे चढ़बा देलकै, जाहि बस स' पंडित जी गाम, घुरेवला छलाह। एतबेमे बनिञा चिकरलै--पंडी जी' हम अहाँ लेल कांगच (सभ स' उन्नत किस्मक मशरुम) रखने छी। कहैत-कहैत भरि मुट्ठी मशरूम हुनकर फिरन कें जेबी मे भरि देलकै। एना लागि रहल छलै, जेना बाजार पंडित जी लेल किछु खास नाञिक' पेलकै।'

बेरहटियाक नमाज समाप्त भ' गेल छलै आ मुल्ला सलामत अनीकेँ पाछाँ-पाछाँ सभटा नमाजी रसे-रसे मस्जिद-स' बाहर निकलि रहल छलै। बस मे घुसैत पंडित जी के सलामत अली देखि लेलकनि। ओ झटकारैत बस दिस पहुँचलनि आ पंडितजी कें एना अपना अंकबारि मे भरलनि, जेना ओ हुनकर अप्पन सहोदर भाई होउथ। अवरुद्ध गला सँ ओ बजलाह- 'भाई! हमरा आओर कें पंडित सभ कें जाए नञि देबाक चाहैत छल। ओ सभ अइ माटीक नैतिक और मूल्य देब'बला ताकत छलाह। बिनु हुनका आओरक, ई धरती शैतानक अड्डा भ' गेलए। मजहबी कि सामाजिक-कोनो वैल्यूए नञि रहि गेल छै। हम सभ आब अहाँ सभकें आपस चाहै छी। अहाँ सभ कें आपस चाहै छी...हमरा आओर कें अहाँ सभक जरूरति अछि'।

अपना घर लेल वापसी यात्रामे पंडित जी अपना के मृत्युक भय आ अनिश्चितता स' मुक्त पेलनि। हुनकर दिगाम मे ई स्पष्ट छलै जे ओ ओत' कत्तहु नञि जेताह, बल्कि अपने माटि पर, अपनही लोकक बीच मरब पसीन करताह। अंततः एहि वर्षक दौरान, भय दुश्चिंता आ अनिश्चितताक बीचो कश्मीर हुनकर अपन धरती छल आ ओहू स' बढ़ि क' एतुक्का लोक सभ हुनका प्रेम क' रहल छलनि आ हुनका मिस क' रहल छलनि।

शब्दार्थ

पगड़ी = मुरेठा।

ब्रह्ममुहूर्त = सूर्योदयसँ पूर्वक समय।

इस्लामी = इस्लाम धर्मकेँ माननिहार (मुस्लिम)।

आतंकवादी = भय उत्पन्न केनिहार।

सदिखन = हरदम।

बेकरी = पाँवरोटी आ बिस्कुट बनबैक स्थान।

पशमीना = कश्मीरी ऊन।

शैव = शिवक भक्त।

बेरहटियाक = दूपहरक बादक।

अंक = कोरा।

अज्ञात = जे बूझल नहि हो।

निस्संतान = जकरा कोनो संतान नहि छै।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

निम्नलिखितमे सँ सही विकल्पक चयन करू :-

(i) अज्ञातवाससँ घुरइत कथा थिक

(क) कश्मीरी (ख) पंजाबी (ग) बंगाली (घ) नेपाली

(ii) किशन लाल जत' पढ़' लेल स्कूल जाइत छलाह तत' कथीक विशाल मंदिर छल?

(क) शिव-पार्वती आ गणेशक (ख) कालीक (ग) दुर्गाक (घ) राधा-कृष्णक

(iii) किशन लाल केकरासँ भयभीत छलाह?

(क) आतंकवादीसँ (ख) गरीबीसँ (ग) व्यापारीसँ (घ) ककरो सँ हि

(iv) आतंकी आ असुरक्षाक भयसँ पंडितजी कतेक वर्ष धरि घर मे नुका-नुका कऽ रहलाह?

(क) सात वर्ष (ख) पाँच वर्ष (ग) तीन वर्ष (घ) दू वर्ष

(v) पंडितजी जखन घरसँ बाहर घुमऽ लेल गेलाह तऽ लोक सभ हुनक की केलकनि?

(क) स्वागत (ख) तिरस्कार (ग) अपहरण (घ) भयाक्रांत

(vi) अपना घर लेल वापसी यात्रामे पंडितजीक दिमागमे केहन विचार भेलनि?

(क) अपन घर नहि छोड़बाक (ख) अपन घर छोड़ि देबाक (ग) घर बेचि देबार (घ) ककरोसँ नहि बजबाक

2. **रिक्त स्थानक पूर्ति करू**

(i) नेनपनमे ओ अपना गामक शिव मंदिर लगक नदीमे ....करैत छलाह।

(ii) ललाट पर सदिखन....................तिलक सुशोभित रहै छलै।

(iii) हुनकर पत्नी ओहि फलक गाछ आ तरकारीक .... देख-देख करैत छलीह।

(iv) अपना घर-सीमानसँ बाहर नञि निकलब, कियैक त' ....बाहरक खतरा मंडरा रहल अछि।

3. नीचाँ देल गेल शब्दमे सँ शुद्ध शब्दमे (✔) सहीक आ अशुद्ध शब्दमे गलतक (X) चेन्ह लगाउ :-

दीनचया, ब्राह्ममुहूर्त, भाँति-भाँति, अंततोगत्वा, आत्मसमान, अनुग्रह, अवरुद्ध, दुश्चिंताक, अनिश्चितताक

4. लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) किशनलाल कश्मीरमे कतऽ रहैत छलाह?

(ii) किशनलाल जाहि गाममे रहैत छलाह से कथीक बगानसँ भरल छलै?

(iii) किशनलालक पत्नीक नाम की छल?

(iv) किशनलाल जखन बससँ शहर जा रहल छलाह तऽ बसमे बैसल यात्री हुनका सँ की कहलनि?

(v) किशनलाल बससँ शहरमे उतरि कऽ कोन-कोन दोकान पर गेलाह?

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) किशनलालक दिनचर्या केहन छल?

(ii) किशनलालक कश्मीरमे जतऽ रहैत छलाह से छोड़बाक लेल किएक विवश भऽ गेलाह?

(iii) शिवरात्रिक उत्सव कतऽ आ केहन होइत छल?

(iv) किशनलाल वापसी यात्रामे अपनाकेँ मृत्युक भय आ अनिश्चिततासँ मुक्त भेलनि से किएक, स्पष्ट करू।

6. जाहि शब्दसँ कोनहुँ कार्य वा व्यापार होएब अथवा करब आदिक बोध हो से क्रिया कहबैछ। जेना-पढ़ैछ, जाइछ, लिखैछ। पाठमे आयल क्रिया शब्द चुनि कऽ लिखू।

7. गतिविधि

(i) कश्मीर कतऽ अछि? पाठ एवं शिक्षकक सहयोगक आधार पर कश्मीरक वर्णन करू।

(ii) अपन अनुभवसँ कोनो यात्रा स्थलक वर्णन करू।

8. निर्देश :

(i) शिक्षकसँ अपेक्षा जे छात्रलोकनि के जम्मू एवं कश्मीरक वर्णन विस्तारसँ बुझाबथि।

द्रुतवाचन

टोटमा

[ई कथा सर्वप्रथम 'स्वेदश' (फरवरी' 48) तथा -आमक जलखरी', जकर नाम बादमे 'सप्त सुमन' भऽ गेल (स्व० श्री योगानन्द झा) मे छपल आ तत्पश्चात् 'रंगशाला' मे -अद्‌भुत टोटमा' शीर्षकसँ संगृहीत भेल। हिन्दी मे सेहो एकर अनुवाद भेल अछि। शुद्ध हास्य-कथाक एकटा नीक उदाहरणक रूपमे ई कथा राखल जा सकैत अछि। ओना कथाक प्रच्छन व्यंग्य ओहि 'टाइप' क चरित्र, पर जाइत छैक, जकर प्रतिनिधित्व कथामे घूटरकका करैत छथि, यद्यपि व्यंग्यक स्वर सम्पूर्ण कथामे कतहु मुखर नहि भेल छैक आ ओ कथामे समग्र रूपसँ अन्तर्निहिते रहैत छैक। मुदा प्राय: यैह कारण थिक जे कथा हास्य-कथाक रूपमे बड़ शुद्ध, शिष्ट आ स्वस्थ प्रभाव छोड़बामे समर्थ भेल अछि।]

बहुत दिन पर परदेशसँ चल अबैत रही। घरक हाल-चाल बुझना सात वर्ष भऽ गेल रहय। बुझितहुँ कोना? चिट्‌ठी-पत्री होइत तखन ने? परन्तु हम तँ रूसल रही। कहाँ-कहाँ घुमलहुँ रुपैयाक हेतु-जमशेदपुर, कलकत्ता, रंगून और सात घाटक पानि पीबि आई पुन: देश जा रहल छी जहाँ नूनूकका छथि, भाइ छथि, भौजी छथि, मुन्ना छथि। सभक लेल सनेस नेने जाइत छिऐन्ह। मुन्ना मोटर देखितहि नाचय लागत। भौजीकेँ साड़ीक कोर खूब पसिन्द पड़तैन्ह। भाइ ओ नूनूकका़क आगाँ रुपैयाक आगाँ मोटरी पटकि देबैन्ह जे लियऽ, आब भेल? एही खातिर दिन-राति महाभारत मचैत छल। आब त खुशी भेलहुँ? पहिने लिखि देने रहितिऐन्ह स्टेशन पर घोड़ी अबैत। आब एकाएक हमरा देखि कऽ सभ गोटे अकचकाइ जैताह।

यैह सभ सोचैत, मनमे नाना प्रकारक भावना करैत चल अबैत छलहुँ। जखन ट्रेन बरौनी पहुँचल त मातृभूमिकेँ मनहि-मन वन्दना कय कहल-आब भगवानक इच्छा हैतेन्ह त एके पहरमे अहाँक दर्शन भऽ जायत। एहि सात वर्षमे नहि जानि की की परिवर्तन भेल हैत। गाम पर के कोना अछि? कोनो गौआँसँ भेंट भऽ जाइत त सभटा हालचाल बुझि जइतहुँ।

हम यैह सोचैत छलहुँ कि देखाई पड़लाह घूटर काक-झोरी, कम्बल ओ गंगाजलक सुराही हाथमे नेने, प्लेटफार्म पर दौड़ैत! जेना कोनो निधि भेटि गेल हो तहिना प्रसन्नता भेल। खिड़कीसँ माथ बाहर कय सोर-केलिऐन्ह-घूटर कका!

घूटर कका हमरा देखि चकित भऽ गेलाह-के? श्रीकान्त? हौ, तोँ कतय सँ? इह! कतेक दिन पर तोँ ऊपर भेलाह? एना केओ घर-द्वार छोड़ैत अछि?

हम प्रेमपूर्वक हुनक चरण-धूलि लऽ अपना लग बैसा कऽ पुछलिऐन्ह-कहू घूटर कका, सभ कुशल-मंगल छैक?

घूटर कका बजलाह-बड़ बढ़ियाँ। तोँ अपन कहह, कोना छलह? एकटा चिट्‌ठिओ-पत्री त कहियो दितहुन।

हम बात बदलैत कहलिऐन्हि-एखन कहाँसँ आबि रहल छिऐक?

घूटर कका बजलाह-सिमरियाघाट गेल छलहुँ गंगाजल लेबक हेतु।

हम–कहू घूटर कका, वैदगीरी खूब चलैत अछि कि नहि?

घूटर–देहातमे की चलत? कंओ कि दाम खर्च करऽ चाहैत अछि?

ई कहैत घूटर कका हमरा दिसि गम्भीर दृष्टिसँ तकलन्हि। जेना कोनो बात लक्ष्य करैत होथि। पुनः दोसर दिस ताकि एक दीर्घ निश्वास छोड़लन्हि।

हमरा हृदयमे धुकधुक्की होमय लागल–रे बाप? की बात छैक?

पुछलिऐन्ह–घूटर कका, हमरा ओहिठाम सभ लोक निकें अछि कि ने? कोनो अनिष्ट घटना त नहि भेलैक अछि।

घूटर कका बटुआसँ तम्बाकू बहार करैत बजलाह–अहाँक घोड़ी मरि गेल।

हम– अहा! घोड़ी मरि गेल? हम कहैत छलहुँ जे एहि बेर गाम जाएब त ओहि पर खूब बूलब। कोना मुइलैक?

घूटर –दलानक पछुअतिमे बान्हल रहय। जखन दलानमे आगि लगलैक त ओहि संग ओहो जरि गेल।

हम–आहि रौ बाप! हमर दलानो जरि गेल। से कोना?

घूटर–जखन घरमे आगि लागल त दलानोमे धऽ लेलकैक। जा लोक मिझाबय–मिझाबय ता साफ भऽ गेलैक। रातिक समय रहैक कि ने?

हम माथ पर हाथ दऽ कऽ निस्तब्ध रहि गेलहुँ। हाय रे कर्म! एतवा दिन पर घर जा रहल छी त आब घरे नहि!

शंकित चितसँ पुछलिऐन्ह–कोनो लोक त नहि नोकसान भेलैक?

घूटर–नहि। लोक नहि जरल। किएक त...

हम फक दऽ निसास छोड़ल। खैर, लोक तक बाँचल। चीज–वस्तु, जान बचतैक त फेर भऽ जेतैक। परन्तु जौँ मुन्ना...। ई सोचैत देह सिहरि उठल। पुछलिऐन्ह–की? ई आगि कोना लगलैक?

घूटर कका बजलाह–अहाँक नूनूककाक एकादशाह दिन जे दूध औंटल गेलैन्ह तकरे आगि....

ई सुनैत हमरा आँखिक अगाँ अन्हार भऽ गेल। एँ! आब नूनूककाकेँ नहि देखबैन्ह? हे भगवान! हम केहन पापी भेलहुँ!

हमरा आँखि देखि घूटर कका बजलाह–एना केओ अधीर होअए? जन्म–मरण त लोककेँ लगलै रहैत छैक। एहि संसारमे केओ जीवय आयल अछि?

हम हिचकैत–हिचकैत पुछलिऐन्ह–हुनका की भेल छलैन्हि?

घूटर–कोनो तेहन रोग–व्याधि त नहि छलैन्हि। अहाँक भौजीक एकोदिष्ट कएने रहथि, ताहि दिन पेटमे तेहन दर्द उठलैन्ह जे.....

–हाय!हाय! भौजी पहिनहि विदा भऽ गेलीह! आब बैगनी कोरक ओ साड़ी के पहिरत,

हम फफकि-फफकि कऽ कानय लगलहुँ। घूटर कका चुप करैत बजलाह-एना केओ बताह होअए, ओ लक्ष्मी छलीह। चलि गेलीह। जे दिन जिबितथि से त कष्टे होइतैन्हि।

हमरा मुँह पर विस्मयबोधक चिह्न देखि घूटर कका बजलाह- ओ त जहियेसँ बिधवा भेलीह तहिये सँ...

आहि रौ बाप! भैयो नहि रहलाह! हम पुक्की पाड़ि कानय लगलहुँ। भैया-भौजी दुनू विदा भऽ गेलीह। आब मुन्ना कँ के रखने हैतैक? कोना हैत?

बड़ी काल धरि नोर-झोरक आवेग सँ बाजि नहि सकलहुँ। ओम्हर घूटर कका निर्विकार भावसँ तमाकू चुनबैत रहताह। कतेक काल पर कोनहुना घड़घड़ाएल कंठसँ पुछलिऐन्ह-मुन्ना कोना अछि?

घूटर कका ठोरमे तमाकू रखैत बजलाह-ओकरे शोकमे त अहाँक भाय मुइलाह। कोना ने होउन्ह? ने खेनाइ ने पिनाइ.....।

हम निष्पन्द रहि गेलहुँ। जे अन्तिम बन्धन छल सेहो टूटि गेल। भैया, भौजी, नूनूकका, मुन्ना सभ समाप्त। आब ककरा खातिर गाम जाउ? और जा कऽ की करब। संसारे उजड़ि गेल! ने ओ राम ने ओ अयोध्या! आब के मोटर पावि नाचत? के साड़ी देखि कऽ खुशी हैत? ककरा पर स्नेहक अभिमान करबैक?

तावत् गामक स्टेशन पहुँचिग गेल-समस्तीपुर जंक्शन। हम छाती कँ बज्र कऽ कऽ बजलहुँ-घूटर कका, हम त आब सोझे हरिद्वार जायब। संन्यासीकँ रुपैया पैसासँ कोन काज? अहाँ ई मोटरी लऽ लियऽ साले-साल हुनका लोकनिक निमित्त ब्राह्मण भोजन करा देल करबैन्ह।

घूटर कका पुनः हमरा दिस गम्भीर दृष्टिसँ तकलन्हि जेना किछु लक्ष्य करैत होथि। पुनः बजलाह-हँ ठीक, आब उतरह।

हम अनुरोध करैत कहलिऐन्ह-अहाँकँ एकोरत्ती दया नहि होइत अछि? हमर घर उजड़ि गेल, निर्वंश भऽ गेलहुँ आर अहाँक लेल धन सन। जाउ, हमर जे डीह-डाबर अछि से अहीं जोति कऽ खाएब।

परन्तु घूटर कका पर एको रत्ती प्रभाव नहि पड़लैन्ह। ओ तमाकूक सिट्ठी फेकैत हमरा हाथ धऽ नीचा उतारय लगलाह। हम हाथ झाड़ैत कहलिऐन्ह-देखू घूटर कका। हम कहि दैत छी। जबरदस्ती नहि करू। हम अपना होशमे नहि छी।

घूटर कका बजलाह-तोँ वैह श्रीकान्त रहि गेलाह। एखन धरि नेनमत्ति नहि छुटलौह अछि। तोहर घर-द्वार, लोक-वेद सभ ओहिना अनामति छौह। चलह, उतरह।

हम कहलिऐन्ह-घूटर कका! परतारू जुनि। आब हम बच्चा नहि छी।

घूटर॰-तोरा विश्वास नहि होइत छौह त चलि कऽ देखि लैह।

हम-त मुन्ना जीवैत अछि?

घूटर०–हँ।

हम–और भैया?

घूटर–ओहो।

हम–भौजी?

घूटर०–ओहो।

हम–आ नूनूकका?

घूटर०–खूब मस्त छथुन्ह।

हम–और घर?

घूटर०–ओहो बाँचल छौह।

हम–तखन दलानो नहि जरल?

घूटर०–नहि।

हम–और घोड़ी,

घूटर०–खूब हिनहिनाइत छौह।

हम–तखन अहाँ एतेक बना कऽ किऐक कहलहुँ?

घूटर०–हौ! बरौनीमे देखल जे तोरा हिचकी उठल छौह। ओना बन्द नहि होइतौह। तँ हम एतेक काल धरि तेहने तेहने बात कहैत ऐलिओह जाहिसँ खूब आतंक भऽ जाओ। ई हिचकीक टोटमा थिकैक। देखै छह नहि, आब हिचकी कहाँ गेलौह?

हमरा भक् दऽ प्राण आएल। घूटर ककाक पैर पर खसैत कहलिऐन्ह–धन्य छी महाराज! हमर प्राण छुटैत छल आर अहाँ टोटमा करैत छलहुँ। तेहन चिकित्सा करय लगलहुँ जे हमर प्राणे जाय लागल? बार रे–बाप! ओतेक अशुभ बात सभ कोना फुरल? हमरा त एखन धरि देह काँपि रहल अछि!

घूटर०–की करबहक? हुनका लोकनिक आयुर्दा और बढ़ि गेलैन्ह। हिचकीक 'टोटमा' एहिना होइत छैक।

काठक बनल लोक

आई रामीकेँ ब्लौक जएबाक छलै। घरखस्सीक पचास टाका भेटतिऐ। ब्लौक एक कोस पर छलै। भोर उठि क' बेलोबाली अल्हुआ उसीनि देलकै। गरम अल्हुआ रामीकेँ नीक लगलै। किछु बेसियं खा लेलकै। आन दिने ठरल रहला पर गरा लागि जाइ छलै। खएलाक बाद रामी सिबनननकेँ संग केलकै। ओकरो टाका भेट' बला छलै।

थोड़े कालमे बुचनियो जारनि बीछए चल गेलै। फेकनी आ बदरिया सभसँ पहिने खा नेने छलै। बेलोबाली ओहि दुनूकेँ माटि लाब' कहलकै। ओसारा ढहि गेल छलै। ओ दुनू तीन-चारि छिट्टा माटि लाबि क' खेलाइ ले' कोम्हरो बहटि गेलै। बेलोबाली दुपहर धरि ओसार लेबैमे रहलै। फेर नहएलै। खाझ्ले बैसलै तँ नोन नहि छलै, टिनही छिपलीकेँ ठामहि दौरीसँ झाँपि पिपराबालीसँ नोन पैंच लाब' गेलै। ओ बैसा क' बड़ी काल धरि बलवाबालीक गप्प लाधि देलकै। भूखसँ पेटमे धाह दिअ' लगलै तँ बेलोबालीसँ नहि रहल गेलै-थारी परसँ उठि क' आएल छलिए। नोन सठि गेल छै। थोड़े दिअ; काल्हि द' देब।

पिपराबाली मौनीमे एक तम्मा नोन आ बाटीमे सजमनिक तीमन देलकै। आँगन अबै काल बेलोबाली बदरियाकें चारि-पाँच हाक देलकै। छौड़ा निपत्ता भ' गेल छलै। बेलोबालीक मोनमे ठेहकलै जे कतहु आइ फेर ने बौकू ओत' पहुँचि गेल होइ। छौंड़ा खराब टेवा पकड़ि नेने छलै। जखन कखनो बौकू खाइ बैसए, बदरिया पहुँचिये जाइ। मोखा लग ठाढ़ भेल एक परतार थारी दिस तकैत रहै। बौकूक आँगनबालीक कतबो दमसौला पर मोखा नहि छोड़ै। सात-आठ दिन धरि बौकू अलग बासनमे ओकरा भात-दालि दैत रहलै। बौकूकेँ अचरज लगै-छौड़ा कोना बूझि जाई छै जे आब ओ खाइ' ले बैसत। बौकूक पीढ़ी पर बैसिते छौड़ा पहुँचि जाइ। ओहिसँ पहिने कतहु देखाइयो नहि पड़ै।

बादमे बदरियाकेँ देखिते बौकूक आँगनबाली केबाड़ बन्न क' दै छलै। केबाड़ बन्न क' लेला पर कहियो तँ ओ चल जाइ छलै, कहियो ठाढ़े रहि जाइ।

इह. केहन ठेक्कर छै! -बौकूक आंगनबाली कहै।

बदरिया कहुना नहि टरै। ओहिना ठाढ़ भेल बिना पल मारने ओकरा दिस तकैत रहै।

एक दिन बौकूक आँगनबाली कोम्हरो चल गेल छलै। दुआरि पर केओ नहि छलै। केबाड़ खाली भिड़ाएल छलै। बदरिया ठेलि क' भीतर पैसि गेलै। केबाड़केँ फेर ओहिना भिड़ा देलकै। डेकची-लोहिया नीचामे चूल्हि लग राखल छलै। बदरिया ढक्कन हटा-हटा सभकेँ देखलकै। तीमनमे टा बचल छलै। ओ लोहियेमे खाएब शुरू क' देलकै। दू कर तीमन रहल होएतै, तखने बौकूक आंगनबाली आबि गेलै। ओकरा संगे आएलि स्त्री ओसारे पर ठाढ़ि छलै कि ओ चिचिएलै-गे माइ, अइ छौड़ाकेँ देखिओ। चोर जकाँ घर ढूकि क' तीमन खएने छै।

बदरियाक हाथ ठमकि गेलै। मुदा, ओ बैसले रहलै आ ओकरा दिस टकटकी लगौने रहलै।

-हे रौ, नीक लोकक इएह लच्छन छिऐ? माइ-बाप इएह सिखौलको-ए? खाइ'ले नहि दै छौ रे? -दोसर स्त्री कहैत रहलै।

बदरिया निर्द्वन्द्व भावें घरसँ निकलि गेलै। ओहि दिन माइ ओकरा मारनौ छलै, मुदा ओकरा आँखिसँ एको ठोप नोर

नहि खसलै। ओकर आश्चर्यजनक साहस आ गम्भीरता देखि क' बेलोबालीकेँ होइ जे लोक साँचे कहै छै-छौड़ा काठक बनल छै। बदरिया देहमे कोनो दम नहि छलै। आँखि धँसि गेल छलै आ छातीक सभटा हाड़ जागि गेल छलै। छौड़ा कोनो ठाम बैसबो करै तँ लगै जेना कतेक ने सुस्ती दाबि देने होइ। उलहन सुनि क' बेलोबाली बदरियाकेँ मारैत-मारैत ओध-बाध तँ उठा दै मुदा लगले ओकर कोंढ़ फाट'- लगै छौड़ाकेँ कतहु किछु भ' ने जाइ!

बदरिया साइते-संजो हँसैत होएतै। जतनसँ खेलाइतो नहि छल। अपनो तूरक धीयापूतासँ कम्मे बाजए अलगेसँ ओहि सभक क्रियाकलापकेँ देखैत रहए। कोनो चीजकेँ तेना भ' क' देखए जेना किछु मोन पाड़ैत हो।

बेर झुकि गेल छलै। बुचनी आँगनमे जारनि पटकि ओसारा पर बैसि गेल। माथ अगिया गेल छलै। ओसारक लेबलाहा भाग दिस तकैत ओ सुस्ताइत रहल। ओकर उसट्ठ देह नेहारैत बेलोबाली बजलै-बगय केहन लागै छै। केशक जट्टा बना नेने छै! कैक बेर कहलिऐ जे चिक्कनि माँटिसँ माथ मीड़ि ले; के सुनै छै।

-तेलक नामे तँ बज्जर खसल है। -माइक बात बुचनीकेँ बरदास्त नहि भेलै। गेलौ-ए बाप टाका लाब' भोरे आनि देतौ। गोर-हाथ धो क' कने खा ले। बुचनीक तामस मिझा गेलै आ मोन पड़लै जे ओकरा बड़ी कालसँ भूख लागल छै। ओ पाँच-छओ टा अल्हुआ खा क' गोर दसेक फेकनी आ बदरिया लेल छोड़ि देलकै। माथमे ढील कटै छलै। माइकें हेरि देबा ले कहलकै। बेलोबाली जट्टाकेँ सोझराबैत ढील हेरैत रहलै।

गोसाँइ डूमि गेलै। बेलोबाली बुचनीकेँ साँझ देब' कहलकै। रामी-नहि आएल छलै। बेलोबाली सोचलकै जे टाका नहि भेट' बला रहितै तँ एखन धरि चल आएल रहितै। बेलोबाली भरोसे छलै जे टाका भेटतै तँ ओम्हरेसँ सिदहा बेसाहने औतै।

थोड़बे कालमे बुचनी, फेकनी आ बदरिया तीनू सूति गेलै। पटियाक एक कोन पर बैसलि बेलोबाली रामीक आस-पेरा देखैत रहलै। डिबिया मकमकाएल जाइ छलै। पहिने ओकरा भेलै जे तेल सठि गेल हेतै, मुदा बतिहरमे खैंठी बैसि गेल छलै।

पिपराबाली हाक पाड़ि क' पुछलकै जे रामी अएलै कि नहि। ओहो सिबननक खातिर जागले छलै। बुझाइत छलै जेना गाममे सभ सूति गेल होइ। आँगन अन्हार कुप्प छलै। केबाड़क बाटे घरमे ठरल कनकन हवा अबै छलै। ओ खुजलाहा पट्टा सटा देलकै।

एके बेर जोरसँ कुकूर लगलै आ धोपि देला पर चुप्प भ' गेलै। सिबनन आ रामी आबि गेल छलै।

-बाप रे, एते राति क' टाका भेटलै! धीयापूता भुखले सूति रहलै-रामीक अबिते बेलोबाली बजलै।

-धुत्त तोरी के, ककरोसँ पैंचो लाबि क' नै किछु कर' अबैत रहै?

- हम कियाने गेलिऐ, एते राति क' एतै! किछु लाबलकै-ए कि नहि?

-हम बाजार देने एलिऐ-अए, जे किछु लाबितिऐ।

-तँ आब हम सुतली रातिकेँ की करिऐ?

–देखौ गय, सिबनाथक दोकान खूजल हेतै। हमरा बड़ जोर जाड़ भेल–अए। चूल्हा लग धधरा क' क' बेलाबाली दोकान दिस चल गेलै। सिबनथा दोकानमे सूतै छलै। ओ बिचारिते रहए जे आब ढड्ड़ी बन्न करत तँ बेलोबाली पहुँचि गेलै। ओकरा घुरबा धरि रामी गरमा मेल छलै देह थिर भ' गेल छलै। बेलोबाली अदहन चढ़ा देलकै। अल्लू काटि क' मसाला पीस' लगलै। बदरिया उठि क', बैसि रहलै आ आँखि मीड़ैत रामीसँ पुछलकै–अँय हौ बाबू, कखन एलहक?

–बांउ हौ, ऊठि गेलहक। आब' आब' आगि लग आबह। हम तँ अखनिएँ एलिऐ बेटा।

–साँझे किऐ नहि एलहक?–ओकर एहि प्रश्न पर बेलोबाली आ रामीकेँ लगलै जेना सभटा दुख–सन्ताप मेटा गेल हो। ओ दुनू दिन भरिमे पहिल बेर मुक्त भ' क' हँसलै।

अद्भुतानन्द

लखनौरसँ बलिया एक कोश जमीन तँ दुनू गामक लोक एक दोसरसँ परिचित। दुनू गामकेँ जोड़ैत लौफा हाट जाइत दुनू गामक लोक दैनिक उपयोग वस्तुजात किनैक छथि। बात बहुत दिनक छैक। एक दिन ऑफसमे एकटा युवक आबि अपन परिचय देलनि। पटनाक विद्युत बोर्डमे जीविकाक आशसँ आएल छलाह। हमर पति साकेतसँ परिचयपताक उपरान्त ओ हमरा लोकनिक ओतए अबैत जाइत रहलाह। हुनक दाबी जे हिसाबमे हमरा सन मास्टर भेटप कठिन। हमर पढ़ाओल विद्यार्थी एखन रूस, अमेरिकामे उच्च पद पर अछि। एक समय लखनौरमे ई किम्बदंती प्रचलित छलैक जे जँ गोर्वाचोव बिहारक धरती पर अओताह तँ बलिया अवश्य जएताह। बलियाक बहुत लोक रूसमे छलैक, आइयो छैक तथा रूसी पत्नीक संग आनंदसँ जीवन व्यतीत क' रहल छैक। कहियो जँ ओ रूसी स्त्री गाम अवैछ जँ ओकरा देखबाक लेल बलियाक लोकक तँ कथे नहि लखनौर, उमरी, देवहीटोल, प्रसाद आदि गामक लोक सभ फिरिशान रहैछ। ओ बलिया बला मास्टकर नाम आनंद रहनि। हुनक वर्णन क्षमता अद्भूत छलैन्हि। बजैत-बजैत बहकि जाइथ। आँखिकेँ संकुचित क' जेना चन्द्र लोकमे पहुँच जाथि। ओहि समय कतबो केओ रोकबाक प्रयास करैत छलनि ओ सुनबे नहि करथि। साकेत हुनका लगसँ हटि जाथि। होशमे आबथि तँ कहथिन-जाह, ओझा जी कतए उड़ि गेलाह, हमर गप्प सुनलनि की नहि?

आनन्दकेँ आन ठाम जे यश भेटल होनि हमर बच्चा सभ एकदम नहि गुदानैत छलनि। हुनका गेलाक उपरान्त हुनक नकल उतारि-उतारि बेहाल रहए। हमर बेटी बाजए-ठीको हिसाब पर क्रॉस क' दैत छथिन। खैर चारिये दिनक पश्चात् हुनका अति विनम्रतासँ कहलियनि आनन्द जी ई सभ बड्ड उद्यण्ड अछि। नहि पढ़-चाहैत अछि अहाँसँ। 'दाइ हम बड़ कड़ा मास्टर छिऐक फाँकी नहि देमए दैत छियनि तेँ ने अध्यक्ष जी ओतए हमर एतेक पुछारि होइत अछि। एक दिन नागा करबनि तुरत अध्यक्ष जी घुरनाकेँ डेरा पठा दैत छथिन-रौ आनंद कत' लापता छौक। जहिना नोन बिनु तीमन हमरा बिनु अध्यक्ष जीक डेरा।

साकेत बजलाह-ऐहन-ऐहन लोक सभकेँ नेता सभक डेरा डंडा पर प्रश्रय भेटि जाइत छैक। ओहि ठाम रहए बला लोक केँ की आफिस जाए, पड़ैत छैक। एत' ओ 'मिसफिट' भ जाएत।

किछु दिनक पश्चात् ओ आबि सूचना देलनि जे बिजली विभागमे हमरा नौकरी भेटि गेल अछि। ओतहि बिजली बोर्ड कॉलनी लग एस्बेस्टक दू टा कोठली भाड़ा पर लेने छथि। हमरा लोकनि के अपना ओतए अएबाक बेर-बेर निमंत्रण दैत ओ भाव विह्वल भ' गेल छलाह। संग-संग हुनक टिप्पणी जे एहि गरीब ब्राह्मणक लेल राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तक पैरवी केएने होथिन किएक तँ हुनक चेला सभ सर्वोच्च पद पर आसीन छथिन।

ई तँ भेल आनंद जीक सामान्य परिचय। साकेत केँ ओ किएक पसिन नहि तकर तँ कतेक गप्प सभ छैक। एक बेर आनंद केश कटा के अएलाह। साकेत पुछलथिन-की कोनो दुर्घटना?

हँ बाबा दिवंगत भ' गेलाह 'क्रियाकर्म भ' गेलनि? हँ यौ तेतक मधुर बनबा लेलिये जे मास दिन धरि गामक लोक

खाइत रहल। ग्रामीणकेँ नोचनी चुलचुल भ' गेलैक।

'तखन तँ ई महाभोज छल।

'की कहूँ! डेढ़ सए वर्षक बूढ़ छलाह। कटिहारी जे लोक सभ गेल छलाह से घुरला पर पाँच टीन तेल ढोरीमे लोक लगा लेलक।

'अच्छा! तखन विस्तारसँ एहि पर चर्च हेतैक आ साकेत गेट खोलि कतहु बहरा गेलाह।'

'किछु दिनक बाद अएलाह तँ दोसरे प्रसंग ल'-पुछलिथनि केम्हर आनन्द।

'दाइ! हम त हाथी पोसि लेलहुँ ने ओकर दाना-पानी तकबाक लेल बाजार अयलहुँ तें अहाँ सँ भेंट करक हेतु आबि गेलहुँ।

'पीपरक पात लेबैक की? एतय पटनामे, अहाँ सँ हाथीक भार उठाओल होएत?

'हाथी नहि परबा पोसलहुँ अछि। दाइ सप्पत खा क' कहैत छी, जे एक पूर्वज अवश्ये कोन्हु नबाबक ओतए पोसल गेल अछि।

'से कोना?'

'जखन ओ अपन पाँखि पसारि नाच' लगैत छैक जँ वैशालीक नगर बधू आम्रपालीक स्मरण दिया दैत छैक। ओह! ओकर सुन्दरता भरि शहरमे चर्चाक विषय छैक। एक पर एक पैघ लोक सभ हमर दरबज्जा पर लाइन लगा क' ओकर सुन्दरता निहारि क' धन्य होइत छैक। पचास-पचास हजारक बोली लोक ओकर लगबैत छैक ओ अद्‌भूत।

'आनन्द तखन तँ ओ पड़बा सभ अहाँ के राजा बना देत।''

'से दिन दूर नहि छैक दाइ।'

फेर ओ विभोर भ 'जाथि। अपन कल्पना लोकमे विचरण करैत मुंगेरी लाल जका हसीन सपना देखैत। नीक-नीक गप्प सभ आबिकेँ कहैत रहू। आब बच्चा सभ सेटल भ' गेल अछि। मोन नहि लगैत अछि।

'दाइ! अपन नातिनक बात तँ कहबै नहि कएलहुँ।

'कहिया भेल नातिन?

ताबत साकेत सेहो ड्राइंग रूम मे मुस्की दैत आबि गेलाह। हुनका प्रणाम करैत कहलनि चेला सभक हाल चाल लेबाक हेतु आबि जाइत छी। दाइ बड़ खुऔने छथि। कनियाँ बड़ आवेशसँ ई सजमनि हिनका लेल सनेस पठौलथिन अछि।

'नातिन भेल छनि।'

'आब जँ ओ दू वर्षक भ' गेल छैक। रूप छैक। मुगले आजमक मधुवाला सन भविष्यमे हेतैक छौड़ी। ओकरा

देखबाक लेल भोरक' इस्कुलिया बच्चा सभ भीड़ लगौने रहैत छैक। काजर पाड़ैत हमर आंगन बाली बेहाल रहैत छथि।

नजरि गुजरि ने लागि जाइक की कही। छी गरीब! मुदा प्रतिदिन ओकरा लेल नव फ्रॉक किनैत छी। पहिरबे ने करत पुरान।

'इहो अद्भूते अछि।'

'हे जे चीज घरमे पुरान देखत, दिया सलाइ खरड़ि क' आगि लगा दैत।

'तखन तँ बड्ड सावधान रहबाक अछि।'

'ओह! की अद्भूत की अद्भूत!

साकेत हँसि के कहलथिन–अहुँ तँ अद्भुतानन्द छी ने।

आ ओ गद्गद् भ'साकेतकेँ गरदनिसँ लगा लेलथिन।

'ओझा जी अपनेक देल नव नाम अद्भुतानन्द हम स्वीकार कएल।

□□□